

हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का कर्ता होय ।
 ऐसी मिथ्याबुद्धि से ही, भ्रमण चतुरगति होय ॥
 यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥२॥
 लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार ।
 पर दुःखमय गति चतुर में, ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार ॥
 यातैं नाशादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥३॥
 अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरशाय ।
 जिनदर्शन कर निजदर्शन पा, सत्गुरु वचन सुहाय ॥
 यातैं अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥४॥

(५)

आओ जिन मंदिर में आओ,
 श्री जिनवर के दर्शन पाओ ।
 जिन शासन की महिमा गाओ,
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥टेक॥
 हे जिनवर तव शरण में, सेवक आया आज ।
 शिवपुर पथ दरशाय के, दीजे निज पद राज ॥
 प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ,
 चहुँगति दुःख से शीघ्र छुड़ाओ ।
 दिव्य-ध्वनि अमृत बरसाओ ।
 आया-प्यासा मैं सेवक आनन्द का ॥१॥
 जिनवर दर्शन कीजिए, आतम दर्शन होय ।
 मोहमहातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय ॥
 शुद्धातम को लक्ष्य बनाओ ।
 निर्मल भेद-ज्ञान प्रकटाओ ।
 अब विषयों से चित्त हटाओ,
 पाओ-पाओ रे मारग निर्वाण का ॥२॥

चिदानन्द चैतन्यमय, शुद्धातम को जान ।
 निज स्वरूप में लीन हो, पाओ केवलज्ञान ॥
 नव केवल लब्धि प्रकटाओ,
 फिर योगों को नष्ट कराओ ।
 अविनाशी सिद्ध पद को पाओ,
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥३॥

(६)

धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है ।
 सिद्धों का दरबार है ये सिद्धों का दरबार है ॥टेक॥
 खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं ।
 दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई है ।
 चारों ओर देख लो भीड़ बेशुमार है ॥१॥
 भक्ति से नृत्य-गान कोई है कर रहे ।
 आतम सुबोध कर पापों से डर रहे ॥
 पल-पल पुण्य का भरे भण्डार है ॥२॥
 जय-जय के नाद से गूँजा आकाश है ।
 छूटेंगे पाप सब निश्चय यह आज है ॥
 देख लो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्ति द्वार है ॥३॥

(७)

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु! तुझ ही में डोले ।
 तुझ ही में डोले, हाँ तुझ ही में डोले ।
 मन की तू घुंड़ी को खोल, खोल-खोल-खोल ।
 तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥टेक॥
 क्यों जाता गिरनार, क्यों जाता काशी,
 घट ही में है तेरे, घट-घट का वासी ।
 अन्तर का कोना टटोल, टोल-टोल-टोल ॥१॥